चलते-चलते सबको दिखाई आध्यात्मिकता की राह....

जहां में जान डालने वाली दादी का अव्यक्तारोहण

चलते..... चलते..... पूरा किया जीवन का सफर
चलते.... चलते..... यूंही वो मिल गया था.....

कहा जाता है ज़िन्दगी का सफर अगर यूं ही कट जाये तो लोग उसे अप्रतिम नहीं मानते, कहते कुछ तो विशेष करते ज़िन्दगी में, जिसे सभी अपनी यादों में समा लेते। बस कुछ ऐसा ही इतिहास हम आपके सामने रखने जा रहे हैं जो अपने आप में अद्वितीय है। एक ऐसा विवरण, एक ऐसा वृत्तांत जो मर्मस्पर्शी है, दिल को अह्लादित करने वाला है और कुछ ऐसा सिखा जाने वाला है जो जीवन को सुखदायी बना जायेगा। ऐसी विदुषी राजयोगिनी दादी जानकी का सम्पूर्ण इतिहास हम आपके सामने कुछ शब्दों के माध्यम से लेकर आना चाहते हैं।

मानव का सम्पूर्ण चरित्र, उसके कर्मों का बीज संस्कार है और संस्कारों का बीज संकल्प है। बस उन्हीं संकल्पों को जिसने शिरोधार्य किया उसी महान हस्ती का नाम राजयोगिनी दादी जानकी है। आपने निराकार दादी के साथ खेलते हैं, उन्हें पुचकारते हैं, प्यार करते हैं, बहलाते हैं। आज अपने मोहपाश में दादी ने परमात्मा को बांध रखा है। आप सोच सकते हैं कि कितनी शक्तिशाली रही होंगी हमारी दादी। आजादी के तुरन्त बाद जाति-प्रथा सहित अनेक बन्धनों को तोड़कर दादी जानकी ने अपनी यात्रा में एक नया अध्याय जोड़ा। सामाजिक कुप्रथाओं का विरोध न कर स्वयं को ही आत्मसंयमित कर दादी ने अपने कदम आगे बढ़ाये। बात करने से पता चलता है कि दादी जी के मन में बचपन से ही दूसरों के जीवन को सुखी बनाने की प्रेरणा आती रहती थी। आध्यात्मिक यात्रा के प्रारम्भिक चरण में आप शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहीं, फिर भी आपने इस पथ पर अपनी भूमिका को परमात्मा की श्रीमत के आधार से बखूबी निभाया। यज्ञ इतिहास में यह बात

अपने संकल्पों के माध्यम से अपने जीवन को सबके लिए आदर्श बनाया। आपने वो कर दिखाया जो एक साधारण मानव को सोचना भी दूभर लगे, एक आईना रहीं आप इस संसार के लिए, वो इसलिए क्योंकि आपने गृहस्थ जीवन से निकलकर वो किया जो समाज को गंवारा नहीं था। आज हर दिल की चहेती बनी दादी जानकी ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा के सफलतम 104 वर्ष पूरे कर लिए हैं। भक्ति भाव से भरी दादी जानकी इस ज्ञान में आने से पहले वो सब कुछ करती थीं जो एक नौंधा भक्ति वाला करता है। एक चाह थी, एक खोज थी, एक तलाश थी उसे पाने की जिसे गुफाओं, कन्दराओं में हज़ारों वर्ष तपस्या करने के बाद भी कोई मनीषी वहां तक पहुंच नहीं पाया। लेकिन दादी जानकी ने अपने जीवन को उस पथ पर पूर्णतया समर्पित कर दिया और उसे ढूंढ कर ही दम लिया। आज वो दिलाराम परमात्मा शिव आती है कि दादी को सेवा भी ऐसी मिली थी जिसे सभी लोग नहीं कर सकते थे। वो हमेशा यज्ञ में आये हुए यज्ञ वत्सों की व्याधियों को ठीक करने तथा उन्हें सेवा देने का काम करती थीं। बीमारी आदि से ग्रस्त भाई-बहनों की नर्स के रूप में आपने खूब सेवा की और वह उस समय की थी जब आप खुद शारीरिक रूप से स्वस्थ नहीं थीं।

दादी एक प्रखर प्रज्ञा

क्या भाषा बाधा हो सकती है हमारी प्रगति में? शायद नहीं, वो इसलिए क्योंकि दुनिया में लोग भाव को महत्व ज़्यादा देते हैं, भाषा को नहीं। प्रखर प्रज्ञा के रूप में जानी जाने वाली हमारी दादी इसका एक मिसाल हैं जिन्होंने विदेशी भाषा को न जानने के बावजूद भी अपनी योग शक्ति व परमात्म बल से विदेशी जनों को भी अपना बनाया और ऐसा बनाया कि आज विदेश के सभी प्रबुद्ध जन दादी के एक-एक महावाक्य को अपने लिए प्रगति की सीढ़ी मानते हैं। लौकिक शिक्षा दादी की बहुत कम रही परन्तु अपनी चौदह वर्षों की तपस्या के बल से उन्होंने आध्यात्मिक शिक्षा को अपने अंग-अंग में उतारा।

डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित

दादी को विश्व जनमानस के मन में नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के अनुपम कार्य के लिए विशाखापट्टनम स्थित गीतम यूनिवर्सिटी द्वारा डॉक्टरेट की उपाधि से नवाजा गया, जिसके तहत आपने लाखों लोगों की ज़िन्दगी में सकारात्मक बदलाव लाया। आज हमारी दादी जानकी प्रखर प्रज्ञा के रूप में चारों तरफ अपनी प्रज्ञा को बिखेर रही हैं। उनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं के ज्ञान चक्षु खुल रहे हैं।

दादी जानकी को ईश्वरीय विश्व विद्यालय की ओर से पाश्चात्य संस्कृति को भारतीय संस्कृति के साथ मिलाने के लिए सेवा पर भेजा गया। उनके अन्दर पूर्णतया भारतीय संस्कृति का भाव घर कर जाये इस आधार से उन्होंने पाश्चात्य देशों में मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। सन् 1970 में दादी पहली

ये गीत उनके जीवन जीने की वजह बना, लेकिन उसे चरितार्थ किया मौलाई मस्ती में रहने वाली राजयोगिनी दादी जानकी ने, एक ऐसी मस्त फकीर, जिसने इश्क-ए-हकीकी द्वारा उस खुदा की खिदमत में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर अपने जीवन के हर कदम में उसे अपना साथी बना लिया। दूसरों के जीवन के लिए समर्पित दादी को एक ऐसे ही सहारे की ज़रूरत थी जो उसका साथ हर पल, हर क्षण देता रहे। राह में छोड़ के जो कभी गुमराह न हो जाए, ऐसे परमात्मा को दादी ने अपने ज्ञान और योग की शक्ति से अपना बनाया और ये गीत गुनगुनाया... यूं ही वो मिल गया...

बार इंग्लैण्ड गईं और अपनी आध्यात्मिक शक्ति और प्रखर प्रज्ञा के आधार से पाश्चात्य संस्कृति में मूल्यों को सिंचित किया। आज उनकी प्रज्ञा के आधार से ही लगभग सेवाओं का विस्तार 140 देशों तक पहुंचा है।

ऐसी दादी को यदि हम विश्व की तीव्रतम व सभी की बुद्धि को भेदने वाला ब्रह्मास्त्र कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आज उनका एक-एक शब्द एक अस्त्र की तरह ही लगता है जो सारी बुराइयों को एक सेकण्ड में नष्ट कर सकता है।

जो हमने देखा .... जो पाया....

एक बार की बात है, दादी आबू रोड से 6 कि.मी. दूर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के शान्तिवन परिसर में स्थित एक विशाल सभागार डायमण्ड हॉल में एक भव्य कार्यक्रम को सम्बोधित कर रही थीं, संयोगवश उसमें 'तत्कालीन उपराष्ट्रपति माननीय श्री भैरो सिंह शेखावत जी' भी उपस्थित थे। जब अपने मुख्य अतिथिय भाषण में माननीय श्री उपराष्ट्रपति बोल रहे थे, तो उनके मुख से दो बार एक ही शब्द निकला कि "बह्माकुमारियाँ आत्मा सो परमात्मा का ज्ञान सबको दे रही हैं कि आत्म ही परमात्मा है।" तो दादी ने उस समय कहा था कि पिछले छह दशकों से हम इसी बात पर प्रयास कर रहे हैं, स्पष्ट कर रहे हैं कि आत्मा अलग है और परमात्मा अलग है। यहाँ हम यह स्पष्ट करना चाह रहे हैं कि दादी का भगवत् प्रेम मानव प्रेम से बहुत ऊपर है, उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि बुरा लगेगा, लेकिन भगवान की श्रीमत को सबसे ऊपर रखा और बीच में रोक कर यह बात कही। और यह बात हमारे माननीय उपराष्ट्रपति को बहुत अच्छी लगी, उन्होंने यह कहा भी कि आपकी परमात्म आस्था देखकर मैं धन्य हो गया।

दादी निर्भीक हैं इस बात को आप उपरोक्त उदाहरण द्वारा देख भी सकते हैं। उन्हें यह पूर्णतः विश्वास है कि यह संस्था ईश्वरीय आधार से है ना कि मानवीय आधार से। कोई भी परमात्मा के कार्य को लेकर असमंजस में ना रहे इसका जीता-जागता और ज्वलंत उदाहरण दादी जानकी हैं। हमने सबसे ज़्यादा दादी से एक ही चीज़ सीखी है कि जो परमात्म बल से चलता है उसे दुनिया सलाम करती है क्योंकि लोग उस बल से हमेशा नीचे ही हैं और प्रायः उसे एक अनजान शक्ति के रूप में देखते हैं लेकिन वह शक्ति प्रकट होती है हमारी धारणाओं से। इसलिए तो दादी के सामने जाते ही एक बल एक भरोसे का पूर्णतः एहसास हो जाता है।

विभिन्न भाषाओं के बीच बोया आध्यात्मिकता का बीज

राजयोगिनी दादी जानकी की मेधा-शक्ति की प्रबलता का आंकलन, हम उनके सभी के मनोभावों को पढ़ने के तरीके से लगा सकते हैं। आध्यात्मिकता के बल से आपने विदेशी संस्कृति के लोगों पर अलग छाप छोड़ी। दादी संस्थान की ओर से 1970 में पहली बार विदेश सेवा हेतु लंदन गईं और वहां पर सबके मनोभावों को पढ़कर लोगों के अन्दर मानवीय मूल्यों का बीजारोपण किया। विदेशी संस्कृति के लोग भी इन मानवीय मूल्यों को अपनाने में खुशी महसूस करते थे। इसका उदाहरण व परिणाम यह है कि लगभग 140 देशों में आध्यात्मिक मानवीय मूल्यों का संचार हो चुका है। मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना में दादी जानकी ने उस ओर कदम बढ़ाया जहाँ बीजारोपण करना बहुत कठिन कार्य था। लेकिन दादी के सतत् प्रयासों से आज संस्था का विस्तार विदेश तक जा पहुंचा है।

आनंद का दूसरा नाम दादी जानकी

कहा जाता है कि सूक्ष्म शरीर में सात चक्र विद्यमान हैं, इन्हीं चक्रों के द्वारा सूक्ष्म शरीर को ऊर्जा मिलती है और शरीर स्वस्थ रहता है। कहते हैं चक्रों में सर्वश्रेष्ठ चक्र सहस्रार है जिसके खुलने के बाद व्यक्ति आनंदित रहता है, उसे और कुछ भी नहीं भाता परमात्मा के सिवाए। वो हमेशा उसी आनन्द में खोया रहता है। हमारी दादी जानकी का वही आनंदमयी चक्र पूर्णतया खुल चुका है उनके मुख से एक ही बात निकलती "कितना मीठा, कितना प्यारा, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा" बस और कुछ नहीं। हमेशा आनंद रस से सराबोर हमारी राजयोगिनी दादी जानकी सभी को उसी रस से सराबोर करने की कोशिश करती। उनकी बुद्धि और कहीं जाती नहीं, स्थिर चित्त दादी को विश्व की प्रथम स्थिर चित्त महिला के खिताब से भी नवाजा जा चुका है। मनोवैज्ञानिकों और वैज्ञानिकों ने भी दादी की शक्ति के आगे अपने आपको नतमस्तक किया। ऐसी हमारी 104 वर्षीय परम आदरणीय दादी जानकी ने अपना समस्त जीवन ईश्वरीय सेवा अर्थ सफल कर अव्यक्तारोहण होकर नई सेवा के लिए फरिश्ता बन उड़ गईं। हम सर्वस्व जिज्ञासुओं का श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।